आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 1/मार्च 2022
Received:12/02/2022; Accepted:13/02/2022; Published:24/03/2022

प्रवासी साहित्य में भारतीय अस्मिता

डॉ. नाजिरून्नीसा .एस
Asst. Prof. & HOD of Hindi,
S.J.M. College of Arts, Science & Commerce,
Chitradurga

डॉ. नाजिरून्नीसा .एस, **प्रवासी साहित्य में भारतीय अस्मिता**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 1/मार्च 2022,(6-10)

सार

प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएं, उपन्यास, कहानियां, नाटक, एंकाकी, महाकाव्य, खण्डकाव्य, अनूदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का सृजन हुआ है प्रवासी साहित्यकारों की संख्या श्लाघनीय है इन साहिंत्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति मूल्य, मिथक, इतिहास के माध्यम से भारतीयता को सुरक्षित रखा है । हिंदी को प्रवाहित रखा जिंदा रखा है। इन साहित्यकारों में प्रमुख नाम हैं - साहित्यकार हरिशंकर आदेश उनकी लगभग तीन सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशित हुई है। वे 1966 से 1976 ई. तक वेस्ट इंडिज में भारत के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत रहे थे। वेस्ट इंडिज के कार्यकाल के दरमियान उन्होंने अवलोकन किया कि चर्च द्वारा वहां बसे हुए भारतीय जिन्हें वर्षो पहले ब्रिटिश मजदूर बनाकर ले गए थे पर धर्मातंर के लिये दवाब डाला जा रहा है। महाकवि आदेश ने इस बात को गंभीरता से लिया। उन्होंने इसे रोकने के लिए नामकरण से लेकर मृत्यु संस्कारादि धार्मिक कार्य के लिये वहां के निवासियों को प्रशिक्षित किया। आदेश जी के कारण वहां के लोगों को राहत मिली। सुरक्षा महसूस हुई इसलिये उन्हें उनका कार्यकाल खत्म होने के बाद भी किसी ने भारत लौटने नहीं दिया। लगभग 50 वर्ष हो गए। वे वहीं के होकर रहे हैं। उन्होंने वेस्ट इंडिज में भारतीय विद्या संस्थान की स्थापना की हैं । इस संस्था द्वारा उन्होंने बी. ए. स्तर के हिंदी पाठयक्रम सीखने का प्रावधान किया हैं। इतना ही नहीं भारतीय आभिजात्य संगीत का पाठयक्रम भी शुरू कर रखा हैं । उन्होंने भारत और हिंदी संबंधी गीत लिखे हैं। उन गीतों तथा रागों का अध्यापन वे स्वयं करते रहें है उनकी हिंदी की तीन सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशित हुई है । उनमें महाकाव्य, खंडकाव्य,

भगवतगीता का हिन्दी और अंग्रेजी पद्यानुवाद तीस नाटक, एंकाकी, जीवनियां आदि है । संगीत और साहित्य के माध्यम से उन्होंने भारतीयता को जिंदा रखा है। "हिंदी" के प्रचार प्रसार में प्रवासी भारतीय साहित्यकार हरिशंकर आदेश का नाम अग्रणीय हैं, वे अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित हैं । इनकी कहानियां अनुभवों की प्रस्तुति हैं। वे पाठकों के साथ संवाद स्थापित करती है ।

प्रस्तावना

विगत कुछ वर्षों से प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों को केंद्र में रखकर विचार-विमर्श जारी है। परंतु अनेक जन इस संकल्पना से परिचित नहीं हैं । 'प्रवासी' किसे कहा जाता है? प्रवासी साहित्य, प्रवासी भारतीय साहित्य अथवा प्रवासी हिंदी साहित्य किसे कहते हैं? इसका स्वरूप कैसे होता है? इसकी सृजनात्मकता किनमें होती है? हम किन्हें प्रवासी साहित्यकार कह सकते हैं? अनेक प्रश्न उभरकर आते हैं? भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं। उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मभूमि बनाया है। यह बात नवीन नहीं है। प्रवासी साहित्य भी नवीन नहीं है। परंतु बीसवीं शती में प्रवासी भारतीयों ने भारतीयता की अस्मिता को जिंदा रखने की भरसक कोशिश की है। प्रवासी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग है। इन पैंतीस-चालीस वर्षों में नवीन विद्युत की के तकनीक विकसित हुए। प्रौद्योगि की चरम सीमा लांघती गयी तो यह साहित्य भी अधिकाधिक जनप्रिय होता गया। जन-जन तक पहुँचता गया। प्रवासी भारतीय भारत से दूर होते हुए भी इस माध्यम से बहुत सान्निकट होते गए हैं। भारतीय मूल के विदेशों में रहनेवालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है और जिन्होंने 'हिंदी' को केंद्र में रखकर या माध्यम बनाकर या हिंदी में लिखा है वे 'प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं तथा यह बहुत समृद्ध ' प्रवासी साहित्य ' है। विद्वद्जन सोचते रहे। विचार-विमर्श जारी रहा। पत्र-पत्रिकाएँ निकलती रही और अनेक हुनर सामने आते गए।

प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनूदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का सृजन हुआ है। प्रवासी साहित्यकारों की संख्या भी श्लाघनीय है। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति- मूल्य, मिथक, इतिहास, सभ्यता के माध्यम से 'भारतीयता' को सुरक्षित रखा है। 'हिंदी' को प्रवाहित रखा, जिंदा रखा। इन साहित्यकारों में प्रमुख नाम हैं- साहित्यकार हरिशंकर आदेश । उनकी लगभग तीन सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। वे 1966 से 1976 ई. तक वेस्ट इंडिज़ में भारत के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत रहे थे। वेस्ट इंडिज़ में अपने कार्यकाल के दरमियान उन्होंने अवलोकन किया कि चर्च द्वारा वहाँ बसे हुए भारतीयों (जिन्हे वर्षों पहले ब्रिटिश मजदूर बनाकर ले गए थे) पर धर्मांतर के लिए दबाव डाला जा रहा है। महाकवि आदेश ने इस बात को गंभीरता से लिया। उन्होंने इसे रोकने के लिए नामकरण से लेकर मृत्यु संस्कारादि धार्मिक कार्य के लिए वहाँ के निवासियों को प्रशिक्षित किया।

आदेश जी के कारण वहाँ के लोगों को राहत मिली। सुरक्षा महसूस हुई। इसलिए उन्हें उनका कार्यकाल खत्म होने के बाद भी किसीने भारत लौटने नहीं दिया। लगभग 50 वर्ष हो गए वे वहीं के होकर रहे हैं। उन्होंने वेस्ट इंडिज़ में 'भारतीय विद्या संस्थान' की स्थापना की है। इस संस्था द्वारा उन्होंने बी.ए. स्तर के हिंदी पाठ्यक्रम सीखने का प्रावधान किया है। इतना ही नहीं तो 'भारतीय आभिजात्य संगीत' का पाठ्यक्रम भी शुरू रखा है। उन्होंने भारत और हिंदी संबंधी गीत लिखे हैं । उन गीतों तथा रागों का अध्यापन वे स्वयं करते रहे हैं । उनकी हिंदी की तीन सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । उनमें महाकाव्य, खंडकाव्य, भगवतगीता का हिंदी और अंग्रेजी पद्यानुवाद, तीस नाटक, एकांकी, जीवनियाँ आदि हैं। संगीत और साहित्य के माध्यम से उन्होंने 'भारतीयता' को जिंदा रखा है। 'हिंदी' के प्रचार-प्रसार में प्रवासी भारतीय साहित्यकार हरिशंकर आदेश का नाम अग्रणी हैं । वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं - जैसे विश्व कवि, महाकवि आदि । उनमें भारत सरकार का 'प्रवासी भारतीय साहित्यकार' सम्मान प्रमुख है।

उषाराजे सक्सेना विख्यात प्रवासी हिंदी साहित्यकार है। इंग्लैंड को कर्मभूमि बनाकर प्रवासी हिंदी साहित्यकारों में इन्होंने काफी सक्रियता रखी हैं। इनके साहित्य में काफी सक्रियता के साथ–साथ इनके साहित्य में भारत भारतीय संस्कृति सभ्यता और भाषा के प्रति हर तरह के अनुभव तथा विचार प्रकट होते दिखाई देते हैं। उनके विदेशी पत्र –पत्रिकाओं में ये छपती रही हैं। इनके दो कविता संग्रह, एक कहानी संकलन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है। वे ब्रिटेन की पुरवाई नामक पत्रिका की संपादक है इनके लेखन में आशा की संभावना नजर आती है। इन्होंने अपने समय तथा समाज की विडम्बना और सत्य को अपने लेखन में अभिव्यक्ति करने की कोशिश की है।

उषावर्मा यॉक विश्वविद्यालय में अनेक वर्षो से हिंदी पढाती है। उनके कविता संग्रह, कहानी संग्रह, अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में ये काफी लिखती रही हैं । समीक्षकों का मत रहा है, कि इनकी कहानियों द्वारा संवेदना, सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकार व्यक्त होता रहा है अधिकतर पश्चिम समाज की विसंगती इनके लेखन द्वारा अभिव्यक्त हुई है।

प्रवासी हिंदी साहित्यकार अलका शर्मा "वाईस ऑफ़ अमेरिका" में कुछ समय कार्यरत रही थी। बाद में लंदन में बी. बी. सी. हिंदी सेवा की अध्यक्ष हैं। इनके लेखन में भारतीय समाज की संवेदना की अभिव्यंजना दिखाई देती है। अर्चना फैनली डेन्मार्क में रहती है। इनकी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। ये अच्छी अनुवादक भी हैं। अनिल कुमार प्रभा अमेरिका में रहती है। वाईस ऑफ़ अमेरिका में संवाददाता के रूप में कार्यरत रही है। न्यूजर्सी में हिन्दी भाषा और साहित्य की प्राध्यापिका हैं। इनके लेखन में स्त्री की महत्वाकांक्षा तथा उसकी त्रासदी अंकित हुई है। इला प्रसाद प्रौद्योगिकी से जुड़ी है। उनके लेखादि वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं में

प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने इला नरेन नाम से रचनाएं की है। उनके लेखन में लंदन में बसे हुए भारतीयों की पीड़ा का अंकन हुआ दिखाई देता है। उनकी "टेम्स का पानी" "मेरे पासपोर्ट का रंग", कविताएं बहुत चर्चित रही है। "कृष्ण बिहारी" अबुधाबी में वरिष्ठ हिंदी अध्यापक हैं। इन्होंने अनेक एंकाकी नाटक लिखें है। साथ ही निर्देशन भी किया है। उनके तीन उपन्यास और तीन गीत संकलन प्रकाशित हुए हैं। स्पष्ट है कि प्रवासी साहित्य अत्यंत संपन्न है प्रवासी साहित्यकार भी अपनी अलग पहचान बनाकर सृजनरत हैं। हम इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों के अनेक अनुभवों, भावनाओं, संवेदनाओं से जुड़ सकते है।

डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी लंदन में भारतीय उच्चायुक्त रह चुके है। उनके वहां के कार्यकाल में हिंदी भाषा और साहित्यिक सृजन में काफी परिवर्तन हुआ। 2000 ई. से वहां "हिंदी ज्ञान" प्रतियोगिता के माध्यम से हिंदी के प्रति सजगता हुई है। उषा वर्मा लंदन के 'यॉक' में रहती है। उनके कविता संग्रह चार कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं साथ ही भारतीय तथा विदेशी पत्र – पत्रिकाओं में अनेक रचनाएं छपी हैं।

अभिमन्यु अनन्त (मॉरेसिस) आदि ऐसे अप्रवासी साहित्यकार हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति को विदेशों में प्रचारित प्रसारित किया है। मेरा प्रस्तुत लेख अप्रवासी अभिमन्यु अनन्त के उपन्यासों पर केन्द्रीत है।

भारतीय सांस्कृति विरासत की परम्परा सुदीर्घ और पुरातन है। यह परम्परा किसी भी समाज की ऐ सी जीवन पद्धति है जो पूर्वजों के अनुभवों से संयुक्त होकर पीढ़ी दर पीढ़ी विरासतके रूप में चलती रहती है। इ से मानव जाति की परम्परागत देन, सामाजिक उपार्जन उपलब्धि और समुदाय विशेष का ऐसा प्रवाह कहा जा सकता है। जो अतीत को वर्तमान से औरवर्तमान भविष्य से जोड़ता है। भारतीय संस्कृति के प्राण में एकतत्व है। उनके रक्त में सहानुभूति हैयही कारण है कि आज इस देश में सहस्राधिक समाज एक दूसरे को बाधा न पंहुचाते हुए भीअपनी विशेषताओं के साथ जीवित है। भारतीय संस्कृति ने सर्वदा समन्वय के रूप में समस्या का समाधान किया है। सभी को अपने साथ जोडा है। भारतीय संस्कृति में सत्य, अंहिसा सद- भावना, मानवता, नैतिकता, त्याग, दयालुता आदि मूल्यों की प्रतिष्ठा है। यह समदर्शी, क्षमाशील और उदार है। "वसुधैव - कुटुम्बकम" इसका आदर्श रहा है। भारतीय संस्कृति के यह सभी मूल तत्व अभिमन्यु अनंत के उपन्यासों में यत्रतत्र बिखरे हुए हैं डॉ.श्यामधर तिवारी लिखते है कि "मौरिशस" में भारत के उत्तरी एंव दक्षिणी दोनों भागों के निवासी गये हुए है । उनमें बिहारी भी है । तो गुजराती भी और तमिल भी है । तो महाराष्ट्री भी । इसी प्रकार हिन्दू धर्मी भी है । तो इस्लामी व ईसाई - धर्मी भी और हिन्दू धर्म में ही आर्य समाजी भी है तो वैष्णव एंव सनातन धर्मी भी वैविध्य के होते हुए भी अप्रवासी भारतीयों में भारतीय संस्कृति अन्तः सलिल भांति प्रवाहित हो रही है।"[1]

श्रीमति मंजु सारस्वत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में जीवन दर्शन इनमें भारत का अतीत गौरव और पर्व त्योहार सुरक्षित है। भारत का स्वर्णिम अतीत भारतीय संस्कृतिका अविभाज्य अंग है। वर्तमान की उपेक्षा हमारा विगत धन-धान्य एंव सिद्धि-बुद्धि सम्पन्न था। ऐश्वर्य का स्वर्ण जाल चारों और बिछा हुआ था। समृद्धि और उत्कर्ष का सूर्य कनक रश्मियों से भारत के ललाट को उन्नत किये हुए था।

जहाँ तक दृष्टि जाती थी वसुधा का दूर्वांचल पवन में झकोरों से लहराता प्रतीत होता था। यह धरती राम कृष्ण की जन्म भूमि है। इसमें महाराजा अशोक और गौतमबुद्ध की अंहिसा परमों धर्मा की चर्चा होती है। कालीदास और रविन्द्रनाथ ठाकुर के गीतों ने देश की महानता को व्यक्त किया हैं सुभाष और गांधी के बलिदान देश की जनता को स्वाधीनता की प्रेरणा देते है। शिवरात्रि के दिन "जम गया सूरज"उपन्यास के नायक लालमन ने यह सबकुछ स्वामी जी के भाषण में सुना तो उसके मन में "भारत दर्शन की अभिलाषा और तीव्र हो गई गुडिया पहाड़ा बोल उठा "[2]। उपन्यास में प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चुनाव की चहल पहल का वर्णन हैं अरुण एक प्रत्याशी है । जो मारदालबेर के राजपूतो का सम्बोधित करते हुए भारत के अतीत गौरव की याद दिलाता हुआ कहता है ।

भारतीय संस्कृति ने अनेक संस्कृतियों को अपने में समाहित कर अपनी शक्ति को बढ़ाया है। यह संस्कृति महासागर के समान है जिसमें अनेक नदियां आकर विलीन होती रही है। इसमें एकीकरण और समन्वय की अपार ताकत है। सत्य, अहिंसा, सद्भाव, मानवता, नैतिकता, त्याग, दयालुता, परोपकार, सहनशीलता आदि गुण इसे महान बनाते है। इस संस्कृति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर्शो की स्थापना की है। सभी प्राणियों पर दया, सभी धर्मों का आदर करतेहुए यह संस्कृति विश्वबंधुत्व की भावना से ओत तप्रोत है। यह आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण धर्मपरायण संस्कृति है ।

संदर्भ:

1. Antarvanshi : Usha Priyamvada : Vani Prakashan : Nai Dilli, 2000
अतर्वंशी : उषा प्रियंवदा , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , 2000
2. Apravasi : Manju kapoor : Random house of India : Noiada, 2009
आप्रवासी : मंजु कपूर , रैण्डम हाउस इंडिया , नोएडा , 2009

****